आमुख

सकल घरेलू उत्पाद(जीडीपी), राष्ट्रीय आय, उपभोक्ता व्यय, पूंजी निर्माण इत्यादि, समाहारों का अनुमान जैसे बृहत्त समाहार प्रचलित मूल्यों तथा स्थिर मूल्यों दोनों अर्थात् आधार वर्ष मूल्यों पर तैयार किए जाते हैं । स्थिर मूल्यों पर अनुमानों की तुलना (जिसका अर्थ है "वास्तविक संदर्भ में) वास्तविक अभिवृद्धि के माप का द्योतक है ।

2. अर्थव्यवस्था में सतत् रूप से होने वाले ढांचागत परिवर्तनों का जायजा लेने के लिए तथा जीडीपी, उपभोक्ता व्यय, पूंजी निर्माण इत्यादि जैसे बृहत्त समाहारों के माध्यम से अर्थ व्यवस्था की सही तस्वीर पेश करने के लिए राष्ट्रीय लेखों को आधार वर्ष आवधिक रूप से बदलना एक विश्वव्यापी गतिविधि है । भारत में नवीनतम आधार वर्ष 1999-2000 है, जिसे 31 जनवरी, 2006 को जारी किया गया था ।

3. केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन (सीएसओ)ने राष्ट्रीय आय संबंधी प्रथम सरकारी अनुमान स्थिर मूल्यों पर अनुमानों के लिए 1948-49 को आधार वर्ष मानकर तैयार किये थे । स्थिर मूल्यों पर सदृश अनुमानों सहित (आधार वर्ष 1948-49) मूल्यों पर इन अनुमानों को तथा सार्वजनिक प्राधिकरणों के लेखों को वर्ष 1956 में "राष्ट्रीय आय के अनुमान" नामक प्रकाशन में प्रकाशित किया गया था । गत वर्षों के दौरान मूल आंकड़ों की उपलब्धता में क्रमिक सुधार होने से राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी की कार्य प्रणाली की पुनरीक्षा लगातार की गई है ताकि आंकड़ा आधार को अद्यतन बनाया जा सके तथा पुराने आधार वर्ष को नये आधार वर्ष में बदला जा सके । परिणामतः, राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी श्रृंखलाओं के आधार वर्ष को अगस्त, 1967 में 1948-49 से बदलकर वर्ष 1960-61, जनवरी, 1978 में वर्ष 1960-61 से बदलकर 1970-71, फरवरी, 1988 में वर्ष 1970-71 से बदलकर 1980-81 तथा फरवरी 1999 में वर्ष 1960-81 से बदलकर 1993-94 किया गया ।

4 विगत में, राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के आधार वर्ष को हर दस वर्ष में बदला गया जो एक 1 से अंत होता है (जैसे 61,71,81) । इसका मुख्य कारण ये था कि आधार वर्ष अनुमानों में कार्यबल पर सूचना एक प्रमुख भूमिका निभाती है और कार्यबल अनुमान जनगणना से प्राप्त होते हैं, जो हर दस वर्ष में की जाती हैं, जिनके अंतिम वर्ष में 1 आता है । तदनन्तर इस व्यवस्था में तब बदलाव लाया गया जब यह निर्णय लिया गया था कि राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण श्रमिक-बल सर्वेक्षणों के माध्यम से प्राप्त कामगार भागीदारी (पीआर) संबंधी आंकड़ों का प्रयोग किया जाए । तदनुसार, केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन 1993-94 के पंचवर्षीय राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण 50वां दौर सर्वेक्षण परिणामों से प्राप्त राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यबल, भागीदारी दरों (डब्ल्यूपीआर) पर आधारित कार्यबल अनुमानों का प्रयोग किया और राष्ट्रीय लेखों के आधार वर्ष को संशोधित करके 1993-94 कर दिया ।

5. इस प्रक्रिया के चलते राष्ट्रीय लेखा की नई श्रृंखला 31 जनवरी, 2006 को जारी की गई थी जिसका आधार वर्ष 1999-2000 है । इस संबंध में जनगणना के योगों सहित 1999-2000 के पंचवर्षीय राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण 25वां दौर से उपलब्ध डब्ल्यूपीआर आंकड़ा का प्रयोग किया गया ।

6. नई श्रृंखला में, आधार वर्ष 1993-94 को 1999-2000 में बदलने के अलावा, कवरेज के संदर्भ में सुधारों और संयुक्त राष्ट्र की राष्ट्रीय लेखा प्रणाली, 1993 (1993 एसएनए) सिफारिशों को यथासंभव शामिल किया गया है ।

7. आंकड़ा श्रृंखला जिनका आधार वर्ष के नवीनतम संशोधन हेतु व्यापक तौर पर प्रयोग किया गया वे (i) रोजगार एवं बेरोजगारी तथा उपभोक्ता व्यय संबंधी रा.प्र.सर्वे. 55वां दौर, (ii) असंगठित विनिर्माण संबंधी रा.प्र.सर्वे.56वां दौर, (iii) सेवा क्षेत्रों सबंधी रा.प्र.सर्वे.57 वां दौर, (iv) आवासीय स्थितियों संबंधी रा.प्र.सर्वे.58 वां दौर, (v) अखिल भारतीय पशुधन गणना, 2003, (vi) जनगणना, 2001 तथा (vii) अखिल भारतीय लघु उद्योग गणना, 2001-02 के परिणाम हैं । के.सां.सं. द्वारा कृषि मंत्रालय तथा राज्य सरकारों और अन्य गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से किए गए अध्ययनों के परिणाम भी चारा उत्पादन, किसानों द्वारा अदा किए गए बाजार प्रभारों का अनुमान लगाने हेतु दरों और अनुपातों तथा विभिन्न श्रेणी के पशुओं के संबंध में मांस, मांस उत्पादों तथा मांस सह उत्पादों की उत्पादन दरों को अद्यतन करने हेतु नई श्रृंखला में प्रयुक्त किए गए हैं ।

8. व्याप्ति के संदर्भ में सुधार मुख्यतः समुद्रीजल के वाष्पीकरण के माध्यम से नमक के उत्पादन, और पान के पत्ते, ताड़ी, बकरी, भैंस और ऊंटनी के दूध, बत्तख के अण्डों के उत्पादन और राज्यों में अपंजीकृत पशुवध से मांस उत्पादन को शामिल किए जाने के कारण हुए हैं जिनमें ये मदें फिलहाल उत्पादन अनुमानों में शामिल नहीं की जाती थीं । इसके अतिरिक्त कुछ पादप फसलों पर उनकी उत्पादन अवधि के दौरान तथा वायु ऊर्जा प्रणालियों पर हुए व्यय, निर्माण क्षेत्र के उत्पाद के अनुमानों में शामिल हैं ।" बहुमूल्य वस्तुओं " की एक नई श्रेणी, जो बहुमूल्य वस्तुओं के अभिग्रहण पर किए गए व्यय को कवर करती है, को 1993 एस एन ए की सिफारिशों के अनुरुप सकल पूंजी निर्माण में शामिल की गई है ।

9. इनके अतिरिक्त, रा.प्र.सर्वे. 55 वें और रा.प्र.सर्वे.57 वें दौरों से उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार संचार, मशीनरी और अन्य उपकरण बिना प्रचालक के किराए पर देना, असंगठित क्षेत्र में कम्प्यूटर से संबद्ध कार्यकलाप, कोचिंग सेंटर, आवास सहित सामाजिक कार्य, मनोरंजन और सांस्कृतिक तथा सहायक कार्यकलाप जैसे अन्य आर्थिक कार्यकलापों को ध्यान में रखा गया है । इन कार्यकलापों का पूर्ववर्ती श्रृंखला में पर्याप्त ढंग से प्रग्रहण नहीं किया गया था ।

10. नई श्रृंखला में किए गए महत्वपूर्ण प्रक्रियात्मक बदलाव हैं - (i) बागबानी से जुड़ी सभी फसलों (मुख्य फसलों के अंतर्गत कवर की गई फसलों को छोड़कर) के संबंध में राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड (एन एच बी) द्वारा उपलब्ध करवाए गए उत्पादन आंकड़ों तथा सभी फसलों के संबंध में राज्य अर्थ एवं सांख्यिकी निदेशालयों द्वारा उपलब्ध करवाए गए मूल्य आंकड़ों का प्रयोग ; (ii) निर्माण क्षेत्र में निर्माण क्षेत्र के उत्पादन मूल्य का अनुमान लगाने हेतु मौजूदा चार (4) बेसिक मेटेरियल्स के अलावा एक नया बेसिक मैटेरियल " फिक्सचर्स एंड फिटिंग्स " का आरंभ ; (iii) बैंकिंग क्षेत्र के उत्पादन का अनुमान लगाने के प्रयोजन से म्यूचुअल फंड की संपत्ति आय से प्रतिधारित रिजर्व और अदा किए गए लाभांशों की नेटिंग ; (iv) उद्योग द्वारा पूंजी निर्माण के अनुमानों का संस्थानों नामतः

सार्वजनिक और निजी संस्थानों द्वारा पूंजी निर्माण के अनुमानों से मेल बैठाना ; (v) निजी कारपोरेट क्षेत्र के बचत अनुमानों में विदेशी कंपनियों के भारत में पुनर्निवेशित उपार्जनों का समायोजन तथा बाह्य संव्यवहार खाते में परिणामी बदलाव ; (vi) निजी कॉरपोरेट क्षेत्र की सकल स्थायी पूंजी निर्माण में, सॉफ्टवेयर की घरेलू खपत (सार्वजनिक क्षेत्र की निवल खरीद), तथा निर्माणाधीन नई कंपनियों के व्यय (मौजूदा कॉरपोरेट वित्त अध्ययनों में ऐसी कंपनियों की कवरेज के अभाव में, पूंजी निर्माण के अनंतिम अनुमान इन अध्ययनों के आधार पर कॉरपोरेट क्षेत्र के पूंजी निर्माण में जोड़ दिए गए हैं) शामिल किए गए हैं ; (vii) विभागीय वाणिज्यिक उपक्रमों के प्रचालनात्मक घाटे को, सिंचाई विभागों के सबंध में इस समय अपनाई जा रही रीति के अनुरुप प्रदत्त इमदाद माना जाना ।

11. जनवरी 2006 में नई श्रृंखला का आरंभ हो जाने के बाद के.सां.सं. ने फरवरी, 2006 में " राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी संबंधी नई श्रृंखला " शीर्षक से विवरणिका जारी की जिसमें कवरेज, नए आंकड़ा स्रोतों का प्रयोग और राष्ट्रीय लेखा प्रणाली, 1993 की कुछ सिफारिशों के समावेश के संदर्भ में नई श्रृंखला में किए गए बदलाव निहित थे । विवरणिका में नई श्रृंखला पर आधारित वृहत आर्थिक समाहारों के अनुमानों का पूर्ववर्ती एन ए एस श्रृंखला (आधार वर्ष 1993-94) के अनुमानों से तुलना भी, दोनों सैटों में अन्तर के कारणों सहित प्रस्तुत की गई है जिससे कि प्रयोक्ता संशोधनों की सीमा तथा विभिन्न वृहत्त आर्थिक समाहारों पर उनके प्रभाव को समझ सकें । बाद में, के.सां.सं. ने मार्च, 2007 में राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकीः स्रोत एवं पद्धतियां, 2007 प्रकाशन जारी किया जिसमें राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के संकलन में अपनाए गए आंकड़ा स्रोतों और कार्यप्रणाली के ब्यौरे दिए गए हैं ।

12. के.सां.सं., प्रयोक्ताओं की 1950-51 से आगे राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के तुलनीय सैट की निरन्तर मांग के मद्देनजर इस प्रकाशन के माध्यम से राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के 1950-51 से 1998-99 तक की अवधि हेतु पिछली श्रृंखला के अनुमान जारी कर रहा है ।इस प्रकाशन में प्रस्तुत किए गए आंकड़ों में 1950-51 से 1998-99 तक के वर्षों के संबंध में आधार वर्ष 1999-2000 सहित राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी की नई श्रृंखला के अनुसार घरेलू उत्पाद, उद्योग/मद स्तर पर पूंजी निर्माण के अनुमान, और अन्य वृहत आर्थिक समाहार शामिल किए गए हैं । हम आशा करते हैं कि सरकारी तथा गैर-सरकारी अभिकरणों, बिजनेस हाउसिज, अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों, अनुसंधान संस्थानों, वैयक्तिक अनुसंधानकर्ताओं तथा राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी के अन्य प्रयोक्ताओं हेतु यह प्रकाशन अति उपयोगी सिद्ध होगा ।

(डा.एस.के.नाथ)
महानिदेशक
केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन

नई दिल्ली,
मई, 2007